तीनों योग मार्गों की तुलनात्मक तालिका

ज्ञानयोग	कर्मयोग	भक्तियोग
आध्यात्मिक साधना	भौतिक साधना	आस्तिक साधना
जाननेकी शक्ति	करनेकी शक्ति	माननेकी शक्ति
विवेककी मुख्यता	क्रियाकी मुख्यता	भाव (श्रद्धा-विश्वास) की मुख्यता
स्वरूपको जानना	सेवा करना	भगवान को मानना
स्वरुपपरायणता	कर्त्तव्यपरायणता	भगवत-परायणता
स्वाश्रय	धर्म (कर्त्तव्य) का आश्रय	भगवदाश्रय
अहंताका त्याग	कामनाका त्याग	ममताका त्याग
अहंताको मिटाना	अहंताको शुद्ध करना	अहंताको बदलना
अपने लिए उपयोगी	संसारके लिये उपयोगी	भगवानके लिये उपयोगी
' अक्षर ' की प्रधानता	'क्षर' की प्रधानता	' पुरुषोत्तम ' की प्रधानता
ज्ञातज्ञातव्यता	कृतकृत्यता	प्राप्तप्राप्तव्यता
अखण्डरस	शान्तरस	अनन्तरस
तात्विक - सम्बन्ध	नित्य – सम्बन्ध	आत्मीय-सम्बन्ध
परमात्मासे एकता	परमात्मासे समीपता	परमात्मा से अभिन्नता
बोधकी प्राप्ति	योगकी प्राप्ति	प्रेमकी प्राप्ति
स्वाधीनता	उदारता	आत्मीयता
स्वरूपमें स्थिति होती है	जड़का आकर्षण मिटता है	भगवानमें आकर्षण होता है
कर्तृत्वका त्याग	भोक्तृत्वका त्याग	ममत्वका त्याग
आत्मसुखसे सुखी होना	संसारके सुखसे सुखी होना	भगवानके सुखसे सुखी होना
कुछ भी न करना	संसारके लिये करना	भगवानके लिये करना
प्रकृतिके अर्पण करना	संसारके अर्पण करना	भगवानके अर्पण करना
विरक्ति	अनासक्ति	अनुरक्ति
देहाभिमान बाधक है	कामना बाधक है	भगवद्विमुखता बाधक है
विचारकी मुख्यता	उद्योगकी मुख्यता	विश्वासकी मुख्यता
कर्म भस्म हो जाते हैं	कर्म अकर्म हो जाते है	कर्म दिव्य हो जाते है
कुछ भी न चाहना	दूसरोंकी चाह पूरी करना	भगवानकी चाहमें अपनी चाह मिलाना
किसीको भी अपना न मानना	सभीको (सेवाके लिये) अपना मानना	एक (भगवान) को ही अपना मानना

(साभार मानवमात्रके कल्याणके लिए)

हे नाथ ! मैं आपको भूलूँ नहीं ।